

प्राकृतिक खेती की क्षमता का आकलन

प्रलिस के लिये:

['परंपरागत कृषिविकास योजना' \(PKVY\), भारतीय प्राकृतिक कृषिपद्धति \(BPKP\)/ZBNF, प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय मशिन \(NMNF\)](#)

मेन्स के लिये:

प्राकृतिक खेती: महत्त्व, चुनौतियाँ, संबंधित पहल तथा आगे की राह

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में क्यों?

[खाद्य एवं कृषि संगठन \(FAO\)](#) द्वारा आंध्र प्रदेश (AP) सरकार के सहयोग से किये गए विश्लेषण से जानकारी प्राप्त हुई है कि [प्राकृतिक खेती के AP मॉडल में औद्योगिक कृषि की तुलना में किसानों के लिये रोजगार के अवसरों को दोगुना करने की क्षमता है](#), जिससे वर्ष 2050 तक समग्र बेरोजगारी कम होगी और साथ ही [किसानों की आय में वृद्धि होगी](#)।

- यह विश्लेषण आंध्र प्रदेश सरकार, फ्राँसीसी कृषि अनुसंधान संगठन एवं FAO द्वारा सामूहिक भवष्य-निर्माण अभ्यास 'एग्रोइको-2050' का एक हिस्सा था।

नोट:

- एग्रोइको-2050 पहल का उद्देश्य वर्ष 2050 तक आंध्र प्रदेश में कृषि, खाद्य, भूमि उपयोग, प्रकृति, नौकरियों और आय के लिये दो संभावित भवष्य का आकलन करना है।**
 - एक दृष्टिकोण पारंपरिक औद्योगिक खेती को तीव्र करने पर केंद्रित था, जबकि दूसरे ने प्राकृतिक खेती (कृषि पारिस्थितिकी) में वृद्धि करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- इसका लक्ष्य इन दोनों मार्गों के नहितार्थों की तुलना करना तथा उनकी सुसंगतता का आकलन करना था।

प्राकृतिक खेती क्या है?

- प्राकृतिक खेती परिचय एवं उद्देश्य:** प्राकृतिक खेती एक रसायन मुक्त दृष्टिकोण है, जो गाय के गोबर और मूत्र सहित स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है, तथा पारंपरिक एवं स्वदेशी प्रथाओं पर बल देती है।
 - यह कृत्रिम उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को समाप्त करता है, तथा **मलचगि सहित खेत पर बायोमास पुनर्चक्रण को बढ़ावा** देती है, तथा जैवविविधता, वनस्पति भिन्नता एवं सभी कृत्रिम रसायनों के बहिष्कार के माध्यम से कीट प्रबंधन करती है।
 - अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, **प्राकृतिक खेती को पुनर्योजी कृषि का एक रूप माना जाता है** - जो ग्रह को बचाने की एक प्रमुख रणनीति है।
 - इसमें **भूमि प्रथाओं का प्रबंधन करने तथा वायुमंडल से कार्बन को मृदा एवं पौधों में संग्रहित करने की क्षमता है**, जहाँ यह हानिकारक होने के स्थान उपयोगी है।
- वर्तमान परिदृश्य:** आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश और केरल सहित कई राज्य पहले ही प्राकृतिक खेती को अपना चुके हैं और सफल मॉडल विकसित कर चुके हैं।
 - अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में होने के बावजूद, **प्राकृतिक खेती प्रणाली** कृषक समुदाय में धीरे-धीरे स्वीकार्यता प्राप्त कर रही है।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF)

- **आंध्र प्रदेश में जीरो बजट प्राकृतिक खेती:**
 - रसायन आधारित, पूंजी प्रधान कृषि के विकल्प के रूप में आंध्र प्रदेश द्वारा वर्ष 2016 में प्रस्तुत **शून्य बजट प्राकृतिक खेती** को **रायथु सधकारा संस्था** (राज्य के कृषि विभाग द्वारा बनाई गई एक गैर-लाभकारी संस्था) के माध्यम से क्रियान्वित किया जाता है।
 - इस योजना को अब आंध्र प्रदेश सामुदायिक प्रबंधित प्राकृतिक खेती कहा जाता है, जिसका लक्ष्य 6 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में 6 मिलियन किसानों को शामिल करना है।
- **वर्ष 2019 के केंद्रीय बजट में ZBNF:**
 - वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयास में वर्ष 2019 के केंद्रीय बजट में भी शून्य बजट प्राकृतिक खेती को प्रमुखता दी गई थी।
 - इसे केंद्र प्रायोजित योजना परंपरागत कृषि विकास योजना' (PKVY) के तहत ' भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP)' के रूप में बढ़ावा दिया जाता है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक और स्वदेशी कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना है।

प्राकृतिक खेती क्यों अपनाई जानी चाहिये?

- **रोज़गार पर प्रभाव:** FAO के अनुसार वर्ष 2050 तक प्राकृतिक खेती में औद्योगिक कृषि की तुलना में दोगुने किसानों को रोज़गार (प्राकृतिक खेती में 10 मिलियन किसान जबकि औद्योगिक खेती में 5 मिलियन किसान संलग्न होंगे) मिलेगा।
 - इस बदलाव से बेरोज़गारी में कमी (प्राकृतिक खेती परदृश्य में बेरोज़गारी घटकर 7% रह जाएगी) आएगी।
- **किसानों की आय: कम उत्पादन लागत (बीज, रसायन, संचाई, ऋण और मशीनरी) और उच्च गुणवत्ता वाली उपज के लिये बेहतर बाज़ार मूल्य के कारण प्राकृतिक खेती, किसानों के लिये अधिक लाभदायक होने की आशा है।**
 - प्राकृतिक खेती से किसानों और गैर-किसानों के बीच आय का अंतर काफी कम (वर्ष 2019 के 62% से वर्ष 2050 तक 22%) हो जाएगा। यह वर्ष 2050 तक औद्योगिक कृषि परदृश्य में अपेक्षित 47% आय अंतराल से लगभग आधा है।
- **भूमि उपयोग और जैवविविधता:** प्राकृतिक खेती के अंतर्गत वर्ष 2050 में कुल खेती योग्य क्षेत्र 8.3 मिलियन हेक्टेयर होगा जबकि औद्योगिक कृषि के अंतर्गत यह 5.5 मिलियन हेक्टेयर होगा।
 - प्राकृतिक खेती मृदा कषरण, मरुस्थलीकरण को रोकने के साथ पुनर्योजी और कृषि-पारिस्थितिकी प्रथाओं के माध्यम से जैवविविधता में सुधार लाने में सहायक होगी।
- **पोषण संबंधी लाभ: प्रति हेक्टेयर कुछ कम पैदावार के बावजूद, प्राकृतिक खेती से औद्योगिक खेती (4,054 कलिकैलोरी/दनि) की तुलना में प्रति व्यक्ति (5,008 कलिकैलोरी/दनि) अधिक पौष्टिक भोजन मिलेगा।**
 - प्राकृतिक खेती से प्राप्त भोजन मैक्रोन्यूट्रिएंट्स, माइक्रोन्यूट्रिएंट्स और फाइबर से समृद्ध होगा तथा इसमें कोई रसायन (उर्वरक, कीटनाशक) या एंटीबायोटिक्स नहीं होंगे।

प्राकृतिक खेती से संबंधित चुनौतियाँ क्या हैं?

- **अपर्याप्त किसान प्रशिक्षण और सहायता:** किसानों को प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को अपनाने और बनाए रखने के लिये अधिक व्यापक प्रशिक्षण और नरितर सहायता की आवश्यकता है।
 - वर्तमान प्रशिक्षण प्रणालियाँ सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने में अपर्याप्त हैं।
- **जटिल प्रमाणन प्रक्रिया:** जैविक खेती के लिये प्रमाणन प्रक्रिया, विशेष रूप से **भागीदारी गारंटी योजना (PGS-इंडिया)**, को जटिल होने के साथ किसान-अनुकूल नहीं माना जाता है।
 - इसके अतिरिक्त तीसरे पक्ष से प्राप्त प्रमाणपत्र महँगे हैं, जो छोटे किसानों के लिये एक बाधा है।
 - **कृषि और परसंसकृत खाद्य उत्पादन नरियात विकास प्राधिकरण (APEDA)** द्वारा कार्यान्वित **राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP)** के तहत तीसरे पक्ष प्रमाणन की प्रक्रिया के माध्यम से जैविक खेती प्रमाणन प्रदान किया जाता है।
- **खराब विपणन संपर्क: जैविक उत्पादों के लिये प्रभावी विपणन प्रणालियों का अभाव है, जिसके कारण लाभकारी कीमतों को लेकर चिंता बनी रहती है।**
 - **प्रधानमंत्री कृषि विकास योजना (PKVY)** जैसे उचित प्रावधानों के बनिा, किसानों को अपने उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- **अपर्याप्त वित्तपोषण और नीतितगत समर्थन:** रासायनिक उर्वरकों के लिये दी जाने वाली सब्सिडी की तुलना में जैविक और प्राकृतिक कृषि कार्यक्रमों को बहुत कम बजट प्राप्त होता है, जो महत्वपूर्ण बाधा है।
 - वैज्ञानिक समुदाय में समग्र समझ और समर्थन का भी अभाव है, जिससे जैविक खेती में परिवर्तन एवं निवेश की संभावना सीमिति होती है।
- **राज्य-स्तरीय कार्यान्वयन में धीमी प्रगति:** यद्यपि कुछ राज्यों की जैविक खेती से संबंधित नीतियाँ हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन धीमा बना हुआ है।
 - संबंधित नीतियाँ होने के बावजूद **कर्नाटक, केरल** और अन्य राज्य अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं।
- **रासायनिक आदानों पर निर्भरता:** कृषि प्रणाली काफी हद तक उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे रासायनिक आदानों पर बहुत अधिक निर्भर है तथा जैविक विकल्पों को अभी भी व्यापक रूप से बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है या अपनाया नहीं जा रहा है।
 - प्राकृतिक और जैविक खेती में कम पैदावार, तथा कीटों एवं खरपतवारों के प्रति उच्च संवेदनशीलता, छोटे व सीमांत किसानों को इन पद्धतियों को अपनाने से रोकती है।
 - इन किसानों के लिये, जो भारत के कृषि समुदाय का 80% से अधिक हिस्सा है, कम उत्पादन उनकी आजीविका के लिये एक गंभीर

